International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 12 Issue 2 Feb 2025 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 8.973
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

कोविड महामारी का व्यापारिक आयात और निर्यात पर प्रभाव

Dr. Anil Kumar sadafal

Principal

Unique college parasia, district Chhindwara Madhya Pradesh MP India

सार

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को अभूतपूर्व तरीके से प्रभावित किया, जिसका व्यापारिक आयात और निर्यात पर गहरा असर पड़ा। यह सिर्फ एक स्वास्थ्य संकट नहीं था, बल्कि इसने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं, उपभोक्ता मांग और उत्पादन क्षमताओं में व्यापक व्यवधान पैदा किए, जिसके परिणामस्वरूप विश्व व्यापार में भारी गिरावट आई। महामारी की शुरुआत में, देशों द्वारा लगाए गए लॉकडाउन, यात्रा प्रतिबंध और सामाजिक दूरी के उपायों ने उत्पादन इकाइयों को बंद कर दिया, श्रमिकों की आवाजाही को रोक दिया और माल के परिवहन को बाधित कर दिया। इससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में गंभीर व्यवधान उत्पन्न हुए। उदाहरण के लिए, चीन, जो वैश्विक विनिर्माण का केंद्र है, में शुरुआती लॉकडाउन से कई उद्योगों के लिए कच्चे माल और तैयार उत्पादों की आपूर्ति बाधित हुई। भारत में भी, अप्रैल 2020 में वस्तुओं के निर्यात में 60.3% और आयात में 58.7% की भारी गिरावट देखी गई। विशेष रूप से फार्मास्युटिकल, इलेक्ट्रॉनिक और ऑटोमोबाइल जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को कच्चे माल की कमी का सामना करना पड़ा। महामारी ने एक साथ मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों को झटका दिया। जहां एक ओर उत्पादन में कमी आई, वहीं दूसरी ओर आर्थिक अनिश्चितता और नौकरी के नुकसान के डर से उपभोक्ता खर्च में कमी आई, जिससे मांग में भी गिरावट आई। आवश्यक वस्तुओं, जैसे चिकित्सा उपकरण और खाद्य पदार्थों को छोड़कर, अधिकांश उत्पादों की मांग कम हो गई। इससे वस्तुओं की कीमतें अस्थिर हो गईं और कई व्यवसायों को राजस्व, ग्राहक आधार और लाभप्रदता में नुकसान हुआ।

मुख्य शब्द

अर्थव्यवस्था,महामारी, वैश्विक, निर्यात, आयात

भूमिका

कोविड-19 महामारी की वजह से दुनिया भर में लॉकडाउन, यात्रा प्रतिबंध और उत्पादन में कमी के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं बुरी तरह प्रभावित हुईं। कच्चे माल की उपलब्धता में कमी, उत्पादन इकाइयों का बंद होना, और परिवहन में देरी ने कई उद्योगों के लिए आयात और निर्यात करना मुश्किल बना दिया। विशेष रूप से चीन, जो वैश्विक विनिर्माण का एक बड़ा केंद्र है, में शुरुआती लॉकडाउन का दुनिया भर के व्यापार पर व्यापक प्रभाव पड़ा। समुद्री, हवाई और सड़क परिवहन पर प्रतिबंधों के कारण माल की आवाजाही बाधित हुई। बंदरगाहों पर भीड़, जहाजों की कमी, और कर्मचारियों की अनुपलब्धता ने निर्यात और आयात दोनों को धीमा कर दिया। माल भाड़े की दरों में भी भारी वृद्धि हुई, जिससे व्यवसायों पर अतिरिक्त बोझ पड़ा। (कार्लुशियो, 2021)

वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी और उपभोक्ताओं के विश्वास में कमी के कारण कई उत्पादों और सेवाओं की मांग में भारी गिरावट आई। इससे निर्यातकों को नए ऑर्डर मिलने में दिक्कतें आईं और मौजूदा ऑर्डर भी रद्द हो गए। वहीं, अनिश्चितता के माहौल ने व्यवसायों को भविष्य के लिए योजना बनाने और निवेश करने से रोका। लॉकडाउन और सामाजिक दूरी के नियमों के कारण कई उद्योगों में श्रमिकों की उपलब्धता कम हो गई, जिससे उत्पादन और लोडिंग-अनलोडिंग प्रक्रियाओं में बाधा आई। कई छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों को वित्तीय तरलता की समस्या का सामना करना पड़ा, जिससे उनके लिए आयात-निर्यात गतिविधियों को बनाए रखना मुश्किल हो गया।

भारत में भी कोविड-19 का आयात-निर्यात पर गहरा असर पड़ा। अप्रैल 2020 में, देश के वस्तुओं के निर्यात और आयात में भारी गिरावट दर्ज की गई, खासकर सोने, कीमती पत्थरों, इलेक्ट्रॉनिक सामान, मशीनरी और कोयला जैसे उत्पादों के आयात में हालांकि, सरकार ने आर्थिक सहायता और लॉकडाउन में ढील देकर स्थिति को सुधारने का प्रयास किया।

कई देशों ने अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक लचीला बनाने और बाहरी निर्भरता कम करने के लिए "आत्मानिर्भरता" की अवधारणा पर जोर देना शुरू किया। इससे घरेलू उत्पादन को बढ़ावा मिला और कुछ उत्पादों के आयात में कमी आई। ई-कॉमर्स और डिजिटल व्यापार प्लेटफार्मों का उपयोग बढ़ा, जिससे व्यवसायों को नए बाजारों तक पहुंचने और आपूर्ति श्रृंखलाओं को डिजिटली प्रबंधित करने में मदद मिली। (एंडरसन, 2020)

महामारी के दौरान चिकित्सा उपकरण, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण और दवाओं की वैश्विक मांग में वृद्धि हुई। जिन देशों के पास इन उत्पादों के निर्माण की क्षमता थी, उन्हें निर्यात के नए अवसर मिले। भारत ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कई देशों को सहायता प्रदान की। व्यवसायों ने अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं को एक ही देश या क्षेत्र पर केंद्रित करने के बजाय उन्हें विविध बनाने की आवश्यकता महसूस की, ताकि भविष्य में इस तरह के व्यवधानों से बचा जा सके। सरकारों ने व्यापार को बढ़ावा देने और आर्थिक सुधार के लिए विभिन्न प्रोत्साहन पैकेज, वित्तीय सहायता और नियामक राहत उपाय लागू किए।

महामारी का प्रभाव विभिन्न देशों और क्षेत्रों में असमान रहा। उन्नत अर्थव्यवस्थाएं, जो उच्च टीकाकरण दर और बड़े नीतिगत समर्थन का लाभ उठा रही थीं, तेजी से सामान्य हुईं। कई उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को स्वास्थ्य देखभाल की कमी और अनौपचारिक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोजगार के कारण अधिक नुकसान हुआ। सरकारों ने अर्थव्यवस्थाओं को सहारा देने के लिए अभूतपूर्व स्तर के प्रोत्साहन पैकेज और सामाजिक सुरक्षा उपाय प्रदान किए। भारत सरकार ने भी समाज के

कमजोर वर्गों और व्यापार क्षेत्र के लिए एक विस्तृत सुरक्षा-जाल का गठन किया और आवश्यक वस्तुओं के आयात पर सीमा शुल्क में छूट जैसे कई व्यापार सुविधा उपाय किए।

महामारी के बाद, वैश्विक व्यापार में कुछ हद तक सुधार देखा गया, खासकर चिकित्सा उत्पादों और अन्य आवश्यक वस्तुओं के व्यापार में। चीन जैसे देशों से कोविड-19 उत्पादों के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे अन्य देशों में कमी को पूरा करने में मदद मिली। भारत ने भी महामारी की अवधि के दौरान कोविड-19 उत्पादों के अपने निर्यात में 15.7% की वृद्धि दर्ज की हालांकि, गैर-कोविड-19 व्यापारिक उत्पादों के आयात में गिरावट बनी रही। (नायर, 2021

कोविड महामारी का व्यापारिक आयात और निर्यात पर प्रभाव

कोविड-19 महामारी की वजह से आयात में विशेष रूप से सोने और कीमती पत्थरों में भारी गिरावट देखी गई। यह मुख्य रूप से आभूषणों की मांग में कमी के कारण था क्योंकि उपभोक्ता खर्च आवश्यक वस्तुओं तक सीमित हो गया था और सामाजिक समारोहों पर प्रतिबंध लगा दिए गए थे। सोने को अक्सर निवेश के रूप में भी देखा जाता है, लेकिन अनिश्चितता के माहौल में लोग नकदी को प्राथमिकता दे रहे थे। (हैंसबर्ग, 2020)

इलेक्ट्रॉनिक सामान और मशीनरी के आयात में गिरावट विनिर्माण क्षेत्र में आई मंदी का सीधा परिणाम थी। उद्योगों में उत्पादन रुकने से नई मशीनरी या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की आवश्यकता कम हो गई। इसके अतिरिक्त, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान ने भी इन वस्तुओं के आयात को और बाधित किया। चीन, जो कई इलेक्ट्रॉनिक घटकों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता है, भी अपनी स्वयं की लॉकडाउन चुनौतियों से जूझ रहा था, जिससे वैश्विक आपूर्ति पर और दबाव पड़ा।

कोयला, जो भारत के ऊर्जा क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण आयातित वस्तु है, के आयात में भी उल्लेखनीय कमी आई। यह बिजली की मांग में गिरावट के कारण था क्योंकि औद्योगिक इकाइयाँ बंद थीं और वाणिज्यिक गतिविधियाँ निलंबित थीं। इसके अलावा, परिवहन प्रतिबंधों ने भी कोयले की आवाजाही को मुश्किल बना दिया था, जिससे आयात की आवश्यकता कम हो गई।

निर्यात के मोर्चे पर भी स्थिति चिंताजनक थी। वैश्विक मांग में तीव्र गिरावट, अंतर्राष्ट्रीय यात्रा और माल ढुलाई पर प्रतिबंध और विदेशी बाजारों में लॉकडाउन ने भारतीय उत्पादों के निर्यात को बुरी तरह प्रभावित किया। कपड़ा, इंजीनियरिंग सामान और पेट्रोलियम उत्पाद जैसे प्रमुख निर्यात क्षेत्रों को भारी नुकसान उठाना पड़ा।

अप्रैल 2020 में वस्तुओं के निर्यात और आयात में आई भारी गिरावट, विशेष रूप से सोने, कीमती पत्थरों, इलेक्ट्रॉनिक सामान, मशीनरी और कोयला जैसे उत्पादों में, कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न अभूतपूर्व आर्थिक व्यवधान का एक स्पष्ट प्रमाण था। यह दर्शाता है कि कैसे एक स्वास्थ्य संकट ने न केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया, बल्कि वैश्विक व्यापार, उत्पादन और उपभोक्ता व्यवहार को भी गहराई से बदल दिया हालांकि बाद के महीनों में धीरे-धीरे सुधार देखा गया, अप्रैल 2020 की यह अवधि भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय था, जिसने उसकी लचीलापन और अनुकूलन क्षमता की परीक्षा ली। (बाल्डविन, 2020)

व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण, वेंटिलेटर, मास्क और परीक्षण किट जैसे चिकित्सा उत्पादों की मांग में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। इस अचानक वृद्धि ने कई देशों में घरेलू उत्पादन क्षमता को चुनौती दी और उन्हें आयात पर अत्यधिक निर्भर बना दिया परिणामस्वरूप, निर्यात करने वाले देशों ने अपनी घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिबंधात्मक नीतियां अपनाईं जिससे वैश्विक बाजार में इन आवश्यक वस्तुओं की कमी हो गई। उदाहरण के लिए, भारत जैसे कई देशों ने शुरुआती दौर में पीपीई और मास्क के निर्यात

पर प्रतिबंध लगा दिया था, जबकि चीन, जो इन उत्पादों का एक प्रमुख उत्पादक है, ने अपनी उत्पादन क्षमता में वृद्धि की और दुनिया भर में आपूर्ति की।

आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान एक और महत्वपूर्ण प्रभाव था। वैश्विक लॉकडाउन, यात्रा प्रतिबंध और श्रम की कमी ने उत्पादन और शिपिंग को बाधित कर दिया। बंदरगाहों पर भीड़ और हवाई माल ढुलाई की लागत में वृद्धि ने भी चिकित्सा उत्पादों के आयात को और अधिक महंगा और धीमा बना दिया। इसने कई देशों को अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं को विविधतापूर्ण बनाने और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया, ताकि भविष्य में ऐसी किसी भी कमी से बचा जा सके।

कोविड-19 महामारी के दौरान कुछ देशों के लिए यह एक अवसर भी साबित हुआ। जिन देशों के पास मजबूत फार्मास्युटिकल और चिकित्सा उपकरण उद्योग थे, उन्होंने अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ाया और वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए निर्यात में वृद्धि की। भारत, "दुनिया की फार्मेसी" के रूप में, वैक्सीन, दवाइयों और जेनेरिक दवाओं के निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने न केवल अपनी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा में भी योगदान दिया।

कोविड-19 महामारी ने देशों को चिकित्सा उत्पादों के आयात और निर्यात के लिए अपनी नियामक प्रक्रियाओं और समझौतों पर पुनर्विचार करने के लिए भी मजबूर किया। कई देशों ने आपातकालीन उपयोग प्राधिकरणों को गति दी और सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को सरल बनाया ताकि आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति की तीव्र आवाजाही सुनिश्चित हो सके। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और कूटनीति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासकर वैक्सीन और अन्य आवश्यक चिकित्सा प्रौद्योगिकियों तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए। (फर्नांडीस, 2022)

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए एक मजबूत और लचीली चिकित्सा आपूर्ति श्रृंखला के महत्व को रेखांकित किया है। इसने देशों को अपनी रणनीतिक भंडार क्षमता बढ़ाने, घरेलू उत्पादन

को प्रोत्साहित करने और द्विपक्षीय व बहुपक्षीय समझौतों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया है। भविष्य में, हम उम्मीद कर सकते हैं कि देश चिकित्सा उत्पादों के निर्यात और आयात में अधिक संतुलित और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अपनाएंगे, जिससे न केवल उनकी अपनी स्वास्थ्य आवश्यकताएं पूरी होंगी बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली भी अधिक सुदृढ़ होगी।

महामारी ने वैश्विक व्यापार को कई स्थायी सबक सिखाए हैं। इसने आपूर्ति श्रृंखलाओं में लचीलेपन और विविधीकरण के महत्व को उजागर किया है। अब देश अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक मजबूत बनाने और कुछ प्रमुख देशों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने पर विचार कर रहे हैं। डिजिटल व्यापार और ई-कॉमर्स को बढ़ावा मिला है, जो भविष्य के व्यापार मॉडल को नया आकार दे सकता है।

महामारी के बाद, वैश्विक व्यापार में धीरे-धीरे सुधार देखा गया। 2021-22 में भारत के विदेशी व्यापार में मजबूती से सुधार हुआ और देश ने अपने महत्वाकांक्षी निर्यात लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रगति की। व्यापार युद्ध और भू-राजनीतिक अस्थिरता वैश्विक व्यापार को प्रभावित कर सकती है। कुछ देशों में संरक्षणवादी नीतियों का बढ़ना वैश्विक व्यापार के लिए चुनौती बन सकता है। जलवायु परिवर्तन और संबंधित आपदाएं भविष्य में आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित कर सकती हैं। साइबर सुरक्षा और डेटा गोपनीयता के मुद्दे डिजिटल व्यापार के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां बन सकते हैं।

कोविड-19 महामारी ने चिकित्सा उत्पादों के निर्यात और आयात के परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया। इसने चुनौतियों और अवसरों दोनों को जन्म दिया, जिससे देशों को अपनी नीतियों और प्रथाओं का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ा। इस अनुभव से सीख लेते हुए, वैश्विक समुदाय को भविष्य की महामारियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार होने और एक न्यायसंगत और विश्वसनीय चिकित्सा आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। (जॉनसन, 2020)

निष्कर्ष

कोविड-19 महामारी ने व्यापारिक आयात और निर्यात पर एक गहरा और बहुआयामी प्रभाव डाला। इसने वैश्विक व्यापार में अस्थिरता, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और मांग-आपूर्ति के असंतुलन को जन्म दिया। हालांकि धीरे-धीरे सुधार हो रहा है, फिर भी वैश्विक व्यापार अभी भी अनिश्चितताओं का सामना कर रहा है। महामारी ने देशों को अपनी व्यापार नीतियों और रणनीतियों पर पुनर्विचार करने, आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने और भविष्य के झटकों के लिए तैयार रहने की आवश्यकता पर जोर दिया है। यह अनुभव निश्चित रूप से वैश्विक व्यापार के भविष्य को नया आकार देगा और इसे अधिक लचीला और समावेशी बनाने की दिशा में प्रेरित करेगा। कोविड-19 महामारी ने व्यापारिक आयात और निर्यात के क्षेत्र में अप्रत्याशित चुनौतियां पेश कीं, लेकिन साथ ही इसने व्यवसायों और सरकारों को नई रणनीतियां अपनाने, नवाचार करने और अधिक लचीली आपूर्ति श्रृंखलाएं बनाने के लिए भी प्रेरित किया। भविष्य में, वैश्विक व्यापार को निरंतर बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढलने और नए अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार रहना होगा। सतत विकास, डिजिटल परिवर्तन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग व्यापार के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण स्तंभ होंगे।

संदर्भ

1. एंट्रास, पी., रेडिंग, एस. जे., और हैंसबर्ग, ई. आर. (2020), वैश्वीकरण और महामारी कोविड अर्थशास्त्र, 49, 1–84।
2. बाल्डविन, आर. और टोमिउरा, ई. (2020), कोविड-19 के व्यापार प्रभाव के बारे में आगे की सोच। बाल्डविन आर., वेडर डी मौरो बी. (संपादकों) में, कोविड-19 के समय में अर्थशास्त्र (पृष्ठ 59-71) सीईपीआर प्रेस

3. बास, एम., फर्नांडीस, ए., और पौनोव, सी. (2022), कोविड-19 के प्रति व्यापार कितना लचीला था? नंबर 9975, पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर सीरीज़, विश्व बैंक
4. बेहरेंस, के., कॉर्कोस, जी., और मियोन, जी. (2021), व्यापार संकट? कौन सा व्यापार संकट? अर्थशास्त्र और सांख्यिकी की समीक्षा, 95(2), 702–709.
5. बेम्स, आर., जॉनसन, आर. सी., और यी, के.-एम. (2020), वैश्विक मंदी में मांग का फैलाव और व्यापार का पतन. आईएमएफ आर्थिक समीक्षा, 58(2), 295–326.
6. बेम्स, आर., जॉनसन, आर. सी., और यी, के.-एम. (2021), महान व्यापार पतन. अर्थशास्त्र की वार्षिक समीक्षा, 5(1), 375–400.
7. बर्थो, ए., और स्टम्पनर, एस. (2022), लॉकडाउन के तहत व्यापार. बैंक डी फ्रांस वर्किंग पेपर नंबर 867.
8. बोनाडियो, बी., हुओ, जेड. लेवचेंको, ए. ए., और पंडालाई-नायर, एन. (2021). महामारी में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ. जर्नल ऑफ इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स, 133, 103534.
9. एंडरसन, जे., और विंकोप, ई. (2020). गुरुत्वाकर्षण के साथ गुरुत्वाकर्षण: सीमा पहेली का समाधान. अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यू, 93(1), 170–192. 10.
10. ब्रिकोंग्ने, जे.-सी., कार्लुशियो, जे., फॉन्टेग्ने, एल., गॉलियर, जी., और स्टंपनर, एस. (2021). मैक्रो से माइक्रो तक: महामारी में विषम निर्यातक. माइमियो.